International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 3; May 2018; Page No. 38-40

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की काव्य भाषा और शिल्प

डॉ0 नीतू शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, आई0 टी0 पी0 जी0 कॉलेज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश
परिवर्तन सृष्टि का नियम है। समय के साथ–साथ समाज परिवर्तित होता रहता है। समाज की बदलती परिस्थितियाँ, समस्याएं और उनका दबाव साहित्यकार और उसकी रचनाओं को प्रभावित करता है–काव्य का विषय, स्वरूप, शिल्प, काव्य–भाषा सब में परिवर्तन होता है। अंग्रेजी और हिन्दी दोनों भाषाओं का साहित्य इसका साक्षी है। अंग्रेजी कवि चांसर की काव्य–भाषा और शिल्प आधुनिक अंग्रेजी कवियों टी.एस. इलियट तथा डब्ल्यू.कीट्स की काव्य–भाषा से भिन्न है, क्योंकि उनका काव्य भिन्न है। इसी प्रकार हिन्दी काव्य के आदिकाल की भाषा मध्यकालीन काव्य की भाषा से तथा प्रयोगवादी और नई कविता की भाषा अपनी पूर्ववर्ती काव्यधाराओं छायावादी–प्रगतिवादी काव्य की भाषा से भिन्न है। काव्य के विषयों, कवियों की रूचि और व्यक्तित्व, काव्य–रचना के उद्देश्य के समानान्तर काव्य की संरचना, उसकी भाषा, उसका शिल्प, उसकी शैली परिवर्तित होती रहती है। इसी सत्य को पहचान कर अंग्रेजी आलोचक ने लिखा है– ''Content and expression are conterminus'' तथा आचार्य शुक्ल ने कहा था ''विषयों की अनेकरुपता के साथ–साथ उनके विधान का ढंग भी बदलता रहता है।

मूल शब्द : आधुनिक, नवजागरण, राष्ट्रीय चेतना।

प्रस्तावना
भारतेन्दु काल को नवजागरण काल कहा जाता है। यद्यपि भारतेन्दु और उनके सहयोगी कवियों को ब्रजभाषा की तीन–चार सौ वर्ष की एक समृद्ध परम्परा विरासत के रुप में प्राप्त हुई थी, परन्तु ईसाई मिशनरियों, इंग्लैण्ड के शासन का कार्य–भार संभालने के लिए आए अंग्रेजों को हिन्दी की शिक्षा देने के लिए कलकत्ता के फोर्ट विलियम कॉलेज के अध्यापकों सदल मिश्र, इंशाअल्ला खां, लल्लू लाल, सदासुख लाल तथा राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द ओर राजा लक्ष्मण सिंह के माध्यम से खड़ी बोली भी नई शक्ति पा रही थी। अंग्रेजों के शासन–काल में राजभाषा उर्दू ही थी। अतः पढ़े–लिखे हिन्दू लोग उर्दू ही लिखते थे और उर्दू में लिखी गई पुस्तकें ही पढ़ते थे। स्वतंत्रचेत्ता भारतेन्दु ने पक्षपात विहीन होकर तथा सामान्य जनता के मन में प्रवेश करने के लिए बोलचाल की सामान्य भाषा को अपनाने तथा उसका प्रयोग करने का निर्णय लिया। उन्होंने अपनी कविता में आवश्यकतानुसार उर्दू शब्दों का प्रयोग किया, मुकरियों में उर्दू के शब्दों की बहुतायत है और गजलें तो उर्दू भाषा में ही लिखी गई हैं।

काव्य भाषा सम्बन्धी भारतेन्दु की सोच को प्रभावित करने वाले प्रमुख तत्व थे
1. भारतेन्दु का व्यक्तित्व बहुआयामी था, वह वैष्णव संस्कारों में पले भक्त थे, धनाढ्य कुलीन परिवार में जन्म लेने के कारण रसिक हृदय थे, वह जागरूक नागरिक थे और अपने देशवासियों की दीन–हीन दशा के प्रति संवेदनशील थे।
2. वह नवजागरण के अग्रदूत थे। जनता को उसके दोष, अवगुण, त्रुटियां बताकर उन्हें वास्तविकता से परिचित कराना तथा उनका मार्गदर्शन करना अपना दायित्व समझते थे।
3. वह हिन्दी कविता के सामन्तों, दरबारियों, रईसों, रसिक जनों की सीमित–संकीर्ण परिधि से निकालकर उसे जनता तक पहुँचाना चाहते थे। उनका मत था कि कविता जन सामान्य का अनुरंजन भी करे तथा उनमें अपनी स्थिति सुधारने की चेतना भी उत्पन्न करे और देश तथा समाज की स्थिति में सुधार हो। वह कविता को जनता के करीब लाना चाहते थे। उसे नए विषयों, नए विचारों, जन आकांक्षाओं, का वाहक बनाना चाहते थे। उसके लिए उत्तम काव्य की कसौटी एक ही थी कि काव्य का विषय, काव्य की संरचना और स्वरूप और काव्य की भाषा जनता के लिए सहज ग्राह्य और उसका मंगल करने वाली हो, जनता की जीवन–दृष्टि में समसामायिक समस्याओं के प्रति उनकी सोच में परिवर्तन लाए। वह धर्म, ईश्वर, भाग्य पर केन्द्रित विश्वासों, आस्थाओं, मूल्यों से अपना ध्यान हटाकर कर्म के महत्व को समझे, आलस्य, प्रमाद, अंधविश्वास, आदि त्याग कर कर्मण्य बने।
4. देश के विभिन्न भागों की यात्राओं ने भी उनके भाषा–सम्बन्धी विचारों को उदार बनाया।
5. वह पत्रकार थे, अनेक पत्र–पत्रिकाओं का सम्पादन किया था और उनके माध्यम से वह सामान्य जनता तक अपने विचारों को पहुँचाना चाहते थे।
6. वह इस तथ्य से परिचित थे कि यदि जनता तक पहुँचना है, कविता को जन–मानस में प्रवेश कराना है, अपना संदेश उन्हें सुनाना है तो काव्य की भाषा को जनता की भाषा, सामान्य भाषा बनना होगा। लोक संगीत लोक–छंद और गाँवों में प्रचलित एवं लोकप्रिय राग–रागनियों का सहारा लेना होगा, जिन्हें ग्रामीण जन चाव से सुनते हैं और मनोरंजन प्राप्त करते हैं।

उन्होंने राष्ट्रीय चेतना को ध्यान में रखकर सभी कवि–लेखकों से अपने निबंध 'जातीय संगीत' में ग्रामगीतों और लोकछंदों को अपनाने का आह्वाहन भी किया–''यह सब लोग जानते हैं कि जो बात साधारण लोगों में फैलेगी, उसका प्रचार सार्वदेशिक होगा और यह भी विदित है कि जितना ग्रामगीत शीघ्र फैलते हैं और जितना काव्य को संगीत द्वारा सुन कर चित्त पर प्रभाव होता है, उतना साधारण शिक्षा से नहीं होता–इस विषय में मैं, जिनको कुछ भी

रचना शक्ति है, उनसे सहायता चाहता हूँ कि वे लोग भी इस विषय पर गीत या छंद बनाकर स्वतंत्र प्रकाश करें या मेरे पास भेज दें, मैं उनको प्रकाश करूंगा और सब लोग अपनी मंडली में गाने वालों को वह पुस्तक दें।.....कजली, ठुमरी, खेमटा, कँहरवा, अद्धा, चैती, होली, साँसी, लँबे, लावनी, जाँते के गीत, बिरहा, चनैनी, गजल इत्यादि ग्रामगीतों में इनका प्रचार हो।

भारतेन्दु को काव्य–भाषा के रूप में ब्रजभाषा विरासत के रूप में मिली थी, उसका प्रयोग पिछले तीन–चार सौ वर्षों से होता रहा था। उसकी कोमलता, संगीत माधुरी, सवैया–भक्ति आदि परम्परागत छंदों में उसका प्रयोग–इन सब गुणों के कारण भारतेन्दु भी ब्रजभाषा को ही काव्य–रचना की उपयुक्त भाषा मानते थे। सूरदास, बिहारी, ब्रजभाषा को प्रवीण घनानन्द के काव्य के वह प्रशंसक थे। अतः उन्होंने आरंभ में ब्रजभाषा में ही काव्य लिखना आरंभ किया। पर उनकी मर्मभेदी दृष्टि ने शीघ्र ही रीतिकाल के कवियों द्वारा प्रयुक्त ब्रजभाषा की त्रुटियों को, जड़ता को पहचान लिया और ब्रजभाषा का कायाकल्प किया। आचार्य शुक्ल ने भारतेन्दु के इस प्रयास की सराहना करते हुए लिखा है, ''भारतेन्दु ने जिस प्रकार हिन्दी गद्य की भाषा का परिष्कार किया, उसी प्रकार काव्य की ब्रजभाषा का भी।'' भारतेन्दु ने ब्रजभाषा कवियों द्वारा प्रयुक्त ऐसे अनेक प्राकृत–अपभ्रंश शब्दों का परित्याग किया जो अप्रचलित थे, अप्रयुक्त थे, बोलचाल की भाषा से उठ गए थे और जिनके कारण कविता जनसाधारण की पहुंच से बाहर हो गई थी और जिनकी वजह से बहुत–से लोग कविता से किनारा खींचने लगे थे। उन्होंने शब्दों को तोड़ने–मरोड़ने और नए गढ़े हुए शब्दों के प्रयोग का भी विरोध किया। अतः परम्परागत ब्रजभाषा को ज्यों का त्यों स्वीकार न कर, उसमें परिवर्तन कर ऐसी भाषा का प्रयोग किया जो बोलचाल की भाषा थी, जनसामान्य की समझ में आने वाली भाषा थी। ऐसी भाषा के प्रयोग का परिणाम यह हुआ कि उनके जीवन–काल ही में उनके सरस और रसपूर्ण कवित्त–सवैये लोगों की जुबान पर चढ़ गए। समसामायिक जीवन की, बोलचाल की शब्दावली का प्रयोग करना आरम्भ कर दिया। उनके नाटकों के गीतों तथा पहेलियों–मुकरियों में प्रयुक्त भाषा जन–भाषा ही है। इस प्रकार उनकी काव्य भाषा वह ब्रजभाषा नहीं है, जो रीतिकालीन कवियों की श्रृंगार–सौन्दर्य के काव्य और लक्षण ग्रंथों में प्रयुक्त होती रही थी। उनके द्वारा प्रयुक्त ब्रजभाषा का अपना स्वरूप है, अपना ढांचा है जिसमें सहजता, सरलता, बोधगम्यता और सरसता पर अधिक बल दिया गया है। कतिपय सुधार करने के बावजूद उन्होंने भाषा की रागात्मक स्वछंदता, कोमलता, व्यावहारिकता और सरसता बनाए रखने का प्रयास किया है। सबसे बड़ा गुण है विषय के अनुरूप भाषा का प्रयोग, ऐसी भाषा का प्रयोग जो नए विचारों को वहन करने की सामर्थ्य रखती हो, जिसमें प्रभावशाली बनाने के लिए उन्होंने मुहावरों–लोकोक्तियों का भी प्रयोग किया है। उन्हीं के प्रयत्नों के फलस्वरूप ब्रजभाषा जनता की भाषा के अधिक निकट होती गई।

गद्य और पद्य की भाषा भिन्न–भिन्न हो। पद्य में ब्रजभाषा का तथा गद्य में खड़ी बोली का प्रयोग हो, यह समस्या भारतेन्दु के समय ही सिर उठाने लगी थी। अतः यद्यपि उन्हें आरंभ में अनभ्यास के कारण खड़ी बोली में काव्य रचना करने में असुविधा और अटपटापन महसूस हुआ क्योंकि खड़ी बोली में दीर्घ मात्राओं वाले क्रियापद प्रयुक्त होते थे जिनके कारण उसमें ऐसी सरसता, कोमलता, संगीत–माधुरी नहीं थी जैसी ब्रजभाषा में थी। पर वह समझ गए थे कि पद्य की भाषा अधिक दिन तक ब्रज नहीं रह पाएगी। इस पर भी उन्होंने खड़ी बोली में कविता लिखने के लिए कलम–घिसाई की। अपनी इस कठिनाई और दुविधा का संकेत उन्होंने 2 अक्टूबर 1872 को 'कविवचन सुधा' में 'हिन्दी भाषा' नामक निबंध में यू लिख–''जो हो मैंने कई बार परिश्रम किया कि खड़ी बोली में कुछ कविता बनाऊँ, पर वह मेरे चित्तानुसार नहीं बनी, इससे यह निश्चित होता है कि ब्रज–भाषा ही में कविता करन उत्तम होता है और इसी के कविता ब्रज–भाषा में ही उत्तम होती है।'' इसके बाद नई भाषा की कविता की अपनी ये पंक्तियाँ उद्धृत करते हुए लिखा,

> भजन करो श्री कृष्ण का, मिल करके सब लोग, सिद्ध होगा काम और छूटेगा सब सोग।

अब देखिए यह कैसी भौंडी कविता हे मैंने इसका कारण सोचा कि खड़ी बोली में कविता मीठी नहीं बनती तो मुझको सबसे बड़ा कारण यह जान पड़ा कि इसमें क्रिया इत्यादि में प्रायः दीर्घ मात्रा होती है, इससे कविता अच्छी नहीं बनती। इन असुविधाओं और अटपटापन महसूस करने के बावजूद भी भारतेन्दु ने नए विषयों पर लिखते समय खड़ी बोली का ही प्रयोग किया। उनके नाटकों के गीतों, पहेलियों, नए जमाने की मुकरियों में खड़ी बोली का ही प्रयोग किया गया है। 'भारत मित्र' नामक पत्र के सम्पादक को भी उन्होंने खड़ी बोली में लिखी कुछ कविताएँ प्रकाशनार्थ भेजी थीं और पत्र में लिखा था, ''देखिएगा कि इस में क्या कसर है। और किस उपाय के अवलम्बन करने से इस भाषा में काव्य सुन्दर बन सकता है। इस विषय में सर्वसाधारण की अनुमति ज्ञात होने पर आगे से वैसा परिश्रम किया जाएगा। तीन भिन्न–भिन्न छंदों में यह अनुभव करने के लिए कि किस छंद में इस भाषा का काव्य अच्छा होगा, कविता लिखी है। मेरा चित्त इससे संतुष्ट न हुआ और न जाने क्यों ब्रज–भाषा से मुझे इसके लिखने में दूना परिश्रम हुआ। इस भाषा की क्रियाओं में दीर्घ भाग विशेष होने के कारण बहुत असुविधा होती है। मैंने कहीं–कहीं सौकर्य के हेतु दीर्घ मात्राओं को भी लघु करके पढ़ने की चाल रखी है। लोग विशेष इच्छा करेंगे और स्पष्ट अनुमति प्रकाश करेंगे तो मैं और भी लिखने का यत्न करूँगा।''

निश्चय ही भारतेन्दु ने खड़ी बोली में कविता लिखने के इस यत्न को और आगे बढ़ाया और अपने नाटकों में जहाँ–तहाँ कहीं ब्रज और खड़ी बोली दोनों को साथ मिलाकर कहीं सिर्फ खड़ी बोली में, कहीं खड़ी बोली की उर्दू शैली में कविताएँ लिखी हैं। कुछ उदाहरण देखे जा सकते हैं,

यह है सुराग का अचल हमारे बाना। असुगन की मूरति खाक न कभी चढ़ाना।। सिर सेंदुर देकर चोटी गूँथ बनाना। कर चूरी मुख में रंग तमोल जमाना।। पीना प्याला भर रखना वही खुमारी। साँची जोगिन पिय बिना वियोगिन नारी।। है पथ हमारा नैनों के मत जाना। कुल लोक वेद सब औ परलोक मितना।। शिवजी से जोगी को भी जोग सिखाना। हरिचंद एक प्यारे से नेह बढ़ाना।। 'अंधेर नगरी' नाटक में व्यंग्योक्ति के माध्यम से, चूरन सभी महाजन खाते। जिससे जमा हजम कर जाते। चूरन खावें एडिटर जात। जिनके पेट पचे नहीं बात।। चूरन साहेब लोग जो खाता। सारा हिंद हजम कर जाता।। चूरन पूलिसवाले खाते। सब कानून हजम कर जाते।।

निष्कर्ष

जहाँ तक काव्यरूप का सम्बन्ध है भारतेन्दु ने प्रबंध काव्य न लिखकर मुक्तक काव्य रचना की और उसमें लोक छंदों, लोक रागों–ठुमरी, दादरा, मल्हार तथा लोक संगीत शैली लावनी, दोहों और व्यंग्योक्तियों (उर्दू का स्यापा, बंदर सभा) समस्या–पूर्ति तथा मुकरियों आदि के नए–नए प्रयोग किए।

संदर्भ

1. अमितामृत– सं0डॉ0 लालता प्रसाद द्विवेदी
2. आधुनिक हिन्दी साहित्य के कीर्ति स्तम्भ–सं0 योगेन्द्र दत्त शर्मा–प्रकाशन विभाग
3. आधुनिक हिन्दी कवियों और लेखकों के काव्य सिद्धान्त–सुधाकर, अजूलता–विकास प्रकाशन कानपुर
4. हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास तथा काव्यांग परिचय–डॉ0 सूर्य प्रसाद दीक्षित–प्रकाशन केन्द्र लखनऊ
5. आधुनिक काव्य चिन्तन और संवेदना–सं0 डॉ0 सुधाकर–विकास प्रकाशन
6. समकालीन सृजन सन्दर्भ–भारत भारद्वाज–वाणी प्रकाशन